प्रथम अध्याय

शोध परिचय

प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

1.1 भूमिका –

किसी वस्तु व्यक्ति अथवा विचार के प्रति व्यक्ति किस प्रकार का व्यवहार करेगा यह बहुत कुछ उस व्यक्ति की उनके प्रति बनी अभिवृत्तियों पर निर्भर करता है। व्यवहार ही नही व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यक्तित्व भी उसकी अभिवृत्तियों के अनुकूल ही ढलता है। जो कुछ भी व्यक्ति सीखता है और आदतो तथा रूचि आदि को ग्रहण करता है ये सभी उसकी अभिवृत्तियों द्वारा प्रभावित होते है।

मकेशी (Mckeachie) ने कहा है कि अभिवृत्ति को हम किसी एक वस्तु से जुड़े हुए प्रत्ययों विश्वासों आदतों और अभिप्रेरणाओं के संगठन के रूप में परिभाषित कर सकते है अर्थात वस्तु के प्रति बनी हुई समस्त धारणाओं, विश्वासों, आदतों और अभिप्रेरणाओं को अभिवृत्ति के साथ जोडने का प्रयत्न किया गया है। ये एक प्रकार से अभिवृत्ति के विभिन्न अवयवों का निर्माण करते हैं। अभिवृत्ति में मुख्य रूप से विचारात्मक, क्रियात्मक तथा प्रभावात्मक अवयव आते हैं। धारणाओ प्रत्ययों विश्वासों का संबंध विचारात्मक अवयव से हैं। आदतों का संबंध क्रियात्मक तथा अभिप्रेरणाओं का संबंध प्रभावात्मक अवयव से होता है। इस रूप से व्यक्ति जो कुछ भी किसी वस्तु के बारे में सोचता है अनुभव करता है और अपनी जिस रूप में प्रतिक्रिया व्यक्त करता है यह सब उसकी उस वस्तु के प्रति अभिवृत्ति को ही व्यक्त करता है।

ट्रेवर्स (Travers) के अनुसार–"व्यवहार के कोई एक दिशा प्रदान करने वाली प्रतिक्रिया के लिये आवश्यक तत्परता का नाम अभिवृत्ति है।" अर्थात अगर किसी को किसी वस्तु के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है तो वह उस वस्तु के प्रति आकर्षित होगा उसे पाने के लिये प्रयत्न करेगा और अगर नकारात्मक अभिवृत्ति हुई तो वह उससे दूर भागेगा और यहाँ तक कि वह उसके नाम से ही चिढ़ने या उत्तेजित होने लगेगा।

विटेकर (Wittakar) के अनुसार– ''अभिवृत्ति (शरीर अथवा मस्तिष्क की) पूर्व नियोजन अथवा तत्परता की वह अवस्था है जो, सार्थक उद्दीपकों के प्रति पूर्व निश्चित तरीके से प्रतिक्रिया करने में सहायक होती है।'' अर्थात अभिवृत्ति को ऐसी प्रवृत्ति या तैयारी की मानसिक या शारीरिक अवस्था मानती है जो व्यक्ति को किसी एक परिस्थिति में एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करने को प्रेरित करती है, व्यक्ति की किसी विशेष उद्दीपकों के प्रति किस प्रकार की प्रतिक्रिया होगी, यह उसके प्रति बनी अभिवृत्ति पर निर्भर करेगा।

अनुसंधानों की विभिन्न अवस्थाओं में महत्वपूर्ण विषयों व वस्तुओं के प्रति व्यक्तियों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है। कुछ अभिवृत्तियाँ अल्पावस्था में सीखी जाती है और स्थिर बनी रहती है, कुछ परिवर्तित होती है और किशोरावस्था और युवावस्था में अर्जित की जाती है और बदलती रहती है। सामाजिक परिस्थितियों के प्रति उनकी अभिवृत्तियाँ जीवन की प्रारंभावस्था में ही बन जाती है और बनी रहती है तथा अधिगम से स्थिर और स्थायी बनती जाती है।

अभिवृत्ति किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना के प्रति एक खास ढंग से अनुक्रिया करने की एक मानसिक तत्परता होती है। अभिवृत्ति में व्यक्ति में अनुकूलता– प्रतिकूलता की विमा पर किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना के प्रति अनुक्रिया करने की तत्परता पाई जाती है। जिस प्रकार छात्र की अभिवृत्ति या मनोवृत्ति कलाकारों, रंगो, चित्रकारी आदि के प्रति अनुकूल होगी। उसी प्रकार वह इनके प्रति अनुकूल व्यवहार प्रदर्शित करेगा। उसी प्रकार यदि किसी छात्र की मनोवृत्ति कला के प्रति प्रतिकूल होगी तो वह कला के विभिन्न पहलुओं को भी तुच्छ बताएंगा और उसके प्रति अपनी नापसंदगी व्यक्त करेगा।

किसी भी अभिवृत्ति मे तीन घटक होते है संज्ञानात्मक घटक, भावात्मक घटक, तथा व्यवहारात्मक घटक। संज्ञानात्मक घटक में व्यक्ति की अभिवृत्ति वस्तु के प्रति ज्ञान तथा उसका अपना विश्वास आदि सम्मिलित होता है। भावात्मक घटक में व्यक्ति के मन में अभिवृत्ति वस्तु के प्रति सुखद या दुखद भाव होता है

तथा व्यवहारात्मक घटक में व्यक्ति के मन में अपनी अभिवृत्ति वस्तु के प्रति अनुकूल या प्रतिकूल व्यवहार करने की तत्परता संयोजित होती है।

सोरेन्सन (Sorenson) के अनुसार- अभिवृत्ति किसी वस्तु के प्रति एक विशिष्ट भावना है अभिवृत्ति में उस वस्तु के प्रति चाहे वह व्यक्ति विचार या पदार्थ कुछ भी हो उससे जुडी हुई परिस्थितियों में एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करने की प्रवृत्ति निहित होती है यह आंशिक रूप से तार्किक और आंशिक संवेगात्मक होती है तथा अभिवृत्ति की एक प्रमुख विशेषता यह है कि अभिवृत्ति किसी भी व्यक्ति में जन्मजात न होकर उपार्जित होती है। अनुभव के द्वारा वातावरण ही इन्हे सिखाता है।

अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित है।

1.2 अध्ययन की आवश्यकता-

बच्चे के जन्म के पश्चात उसका परिवार ही उसकी प्रथम पाठशाला होता है परंतु औपचारिक शिक्षा अर्जन के लिए उसे विद्यालय अवश्य जाना होता है। शिक्षक बालकों की अभिरूचि के अनुसार मार्ग-दर्शन करते है तथा शैक्षिक वातावरण निर्मित करते है। परंतु आज शिक्षा के स्तर में विद्यार्थियों मे असंतोष, मानसिक अशांति, तनाव, अनुशासनहीनता, शिक्षकों का अनादर, शैक्षिक विषयों के प्रति अरूचि, अध्ययन की आदतों मे कमी, गृह कार्य को बोझ समझना आदि अनेक समस्याएँ दिनों दिन बढती जा रही है जिसका सीधा प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। यह सब क्यों हो रहा है? निश्चित ही इसके अनेक कारण हो सकते हैं- राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक, सहपाठी समूह विद्यालय तथा शिक्षक आदि जिनके कारण विद्यार्थियों में विद्यालय के प्रति नकारात्मक या सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित हो रही है। अतः ऐसी स्थिति में विद्यालय के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करने की आवश्यकता का अनुभव किया गया।

शोध की उपयोगिता–

अतः इस अध्ययन के द्वारा प्राप्त परिणामों का उपयोग विद्यार्थियों में विद्यालय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति के विकास द्वारा शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि हेतु विद्यालय प्रशासन द्वारा उसका उपयोग किया जा सकता हैं।

1.3 समस्या कथन–

कक्षा नवमीं के विद्यार्थियां में विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच सहसंबंध का अध्ययन।

1.4 अध्ययन में प्रयुक्त शब्दावली की परिभाषा–

• अभिवृत्ति–

अभिवृत्ति को रूख, मनोवृत्ति आदि शब्दों से जाना जाता है। व्यक्ति अपने जीवन में विविध प्रकार के अनुभव प्राप्त करता हैं। इन अनुभवों के आधार पर व्यक्ति के मन मे उस वस्तु या व्यक्ति के प्रति एक विशिष्ट मनोदशा निर्मित हो जाती है। यही मनोदशा अभिवृत्ति या मनोवृत्ति कहलाती है। अभिवृत्ति की प्रेरणा से व्यक्ति अनेक कार्यो के लिए अभिप्रेरित होता है।

अभिवृत्ति प्रत्यक्षीकरण की देन है। व्यक्ति जब कुछ वस्तुओं का प्रत्यक्षीकरण भली प्रकार से कर लेता है तो उससे संबंधित वह कुछ निश्चित धारणाएँ बना लेता है। इन धारणाओं के प्रबल होने पर इनसे संबंधित वस्तु, विचार या सिद्धांत के बारे में व्यक्ति की एक मनोदशा बन जाती है। यही मनोदशा अभिवृत्ति कहलाती है। यह अभिवृत्तियाँ सकारात्मक या नकारात्मक होती है।

परिभाषाएँ–

जेम्सड्रेवर (James,Drever) के अनुसार – मनोवृत्ति रूचि या उद्देश्य की एक स्थायी प्रवृत्ति है जिसमें एक विशेष प्रकार के अनुभव की आशा और एक उचित प्रतिक्रिया की तैयारी निहित होती है।

इस प्रकार अभिवृत्ति पूर्ण नियोजन अथवा तत्परता की वह व्यवस्था है जो सार्थक उद्दीपकों के प्रति पूर्व निश्चित तरीके से प्रतिक्रिया करने में सहायक

होती है। अर्थात अभिवृत्ति को ऐसी प्रवृत्ति या तैयारी की मानसिक या शारीरिक अवस्था मानी जाती है जो व्यक्ति को किसी एक परिस्थिति में एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करने को प्रेरित करती है।

ऑलपोर्ट (G.W. Alport) के अनुसार –"मनोवृत्ति प्रत्युत्तर देने की वह मानसिक व स्नायुविक तत्परता से संबंधित अवस्था है जो अनुभव द्वारा संगठित होती है तथा उसके व्यवहार पर निर्देशात्मक तथा गत्यात्मक प्रभाव डालती है।"

न्यूकाम्ब (Newcomb) के अनुसार –"एक व्यक्ति की मनोवृत्ति किसी वस्तु की ओर कार्य करने का सोचने का तथा अनुभव करने का उसका पूर्ण विन्यास है।"

तकनीकी परिभाषाः–

वस्तुतः देखा जाये तो –"अभिवृत्ति व्यक्ति की मानसिक या शारीरिक अवस्था होती है जिसमें वह किसी वस्तु के बारे में सोचता अथवा अनुभव कर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है अथवा निश्चित प्रकार का व्यवहार करने के लिये प्रेरित होता है।

अभिवृत्ति के लक्षण–

1. अभिवृत्ति का प्रसार असीमित होता है। हमारी पसंद, नापसंद आदि सब बातें अभिवृत्ति के अन्तर्गत आती हैं।
2. अभिवृत्ति वस्तु के प्रति हमारी स्थिति है– पक्ष में या विपक्ष में।
3. अभिवृत्ति में व्यक्तिगत विभेद होते है।
4. अभिवृत्ति हमारे व्यवहार का आधार है।
5. अभिवृत्ति वातावरण अथवा परिस्थितियों से संबंधित होती है न कि जन्मजात होती हैं।
6. अभिवृत्ति पर्याय रूप से स्थायी होती है। परन्तु इनमें परिवर्तन या संशोधन संभव है।
7. अभिवृत्ति व्यक्त भी हो सकती है और अव्यक्त भी।

• **विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति–**

"विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति अर्थात विद्यार्थियों का शैक्षिक व्यवहार के प्रति दृष्टिकोण" विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्तियों के अन्तर्गत निम्नलिखित दृष्टिकोणों का समावेश किया गया है–

- कक्षा अध्ययन संबंधी।
- शैक्षणिक प्रक्रिया संबंधी
- अध्यापक संबंधी।
- गृहकार्य संबंधी।
- परिवार संबंधी
- शैक्षणिक उपलब्धि संबंधी

इसके अतिरिक्त विद्यालय के प्रति विद्यार्थियों की कर्तव्य परायणता, शैक्षिक कार्यों के प्रति रूचि, नये कौशल, नया ज्ञान जानने का आत्मसात करने की भावना, अध्यापकों के प्रति आदर की भावना का समावेश होता है। प्रस्तुत अनुसंधान में विाद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन का आशय है कि विद्यार्थियों के विद्यालयीन कार्यों के प्रति दृष्टिकोण का मापन करना, जिनके आधार पर शिक्षक उनकी शैक्षिक मनोवृत्तियों में यथासंभव परिवर्तन कर उनमें विद्यालय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्तियाँ विकसित कर शिक्षा के उद्देश्य की पूर्ति कर सकें।

• **शैक्षिक उपलब्धि–**

शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ यह है कि छात्र ने किस अंश तक विद्यालय द्वारा निश्चित किये गये उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया है, उनकी जानकारी लेना है। वह जानकारी, आँकड़ो, मात्रा एवं श्रेणी में व्यक्त की जाती है।

1.5 शोध के उद्देश्यः–

1. कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों में विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति का मापन करना।
2. कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि को ज्ञात करना।
3. कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों में विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सहसंबंध का अध्ययन करना।

1.6 शोध परिकल्पना–

कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक सार्थक सहसंबंध है।

1.7 शोध की परिसीमाएँ–

1. शोध में केवल दो शासकीय विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है जो पांढुर्णा तहसील में स्थित है।
2. शोध में केवल कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।
3. व्यक्तिगत रूप से विद्यार्थियों के मानसिक पक्ष की दृष्टि से विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति का आंकलन किया गया है।
4. शैक्षिक उपलब्धि उनके 8वीं कक्षा के शैक्षिक रिकार्ड द्वारा ज्ञात की गई।